



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 8, August 2024

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.524

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में नामवर सिंह का योगदान

अमिता जैन

सह आचार्य, हिंदी साहित्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

सारांश

हिन्दी आलोचना के विकास में मार्क्सवादी दृष्टि का विशेष महत्व रहा है। मार्क्सवादी आलोचना साहित्य को केवल सौंदर्य, भाषा और शैली के आधार पर नहीं देखती, बल्कि उसे समाज, इतिहास, वर्ग-संबंधों और जीवन-स्थितियों से जोड़कर समझने का प्रयास करती है। हिन्दी में इस आलोचनात्मक दृष्टि को मजबूत बनाने में अनेक आलोचकों का योगदान रहा, जिनमें नामवर सिंह का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। नामवर सिंह ने हिन्दी साहित्य और आलोचना को एक व्यापक सामाजिक, ऐतिहासिक और वैचारिक संदर्भ में देखने की दृष्टि प्रदान की। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में नामवर सिंह के योगदान का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि नामवर सिंह ने साहित्य के मूल्यांकन में समाज, इतिहास, परंपरा, विचारधारा और रचनात्मकता को किस प्रकार जोड़ा। उनकी आलोचना में साहित्य को जीवन और समाज से अलग करके नहीं देखा गया, बल्कि उसे सामाजिक यथार्थ, जनचेतना और ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया से संबंधित माना गया। उन्होंने आलोचना को केवल प्रशंसा या निंदा का कार्य न मानकर एक गंभीर बौद्धिक और वैचारिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि में मार्क्सवादी चेतना प्रत्यक्ष रूप से वर्ग-संघर्ष की चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह साहित्य की सामाजिक उपयोगिता, ऐतिहासिकता, जनपक्षधरता और परिवर्तनशीलता के रूप में दिखाई देती है। उनकी प्रमुख कृतियाँ जैसे 'इतिहास और आलोचना', 'कविता के नए प्रतिमान', 'दूसरी परंपरा की खोज' और 'छायावाद' हिन्दी आलोचना को नई दिशा प्रदान करती हैं। इन कृतियों में उन्होंने साहित्यिक रचनाओं को उनके समय, समाज और वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ समझने पर बल दिया।

कुंजी शब्द: मार्क्सवादी आलोचना, सामाजिक यथार्थ, इतिहासबोध, जनचेतना, प्रगतिशीलता

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में आलोचना की परंपरा ने समय के साथ अनेक रूप ग्रहण किए हैं। प्रारंभिक दौर में आलोचना का केंद्र मुख्य रूप से काव्य-सौंदर्य, भाषा, शैली और रसात्मकता रहा, लेकिन आधुनिक युग में साहित्य को समाज, इतिहास और विचारधारा के संदर्भ में समझने की प्रवृत्ति अधिक मजबूत हुई। इसी परिवर्तनशील आलोचनात्मक दृष्टि में मार्क्सवादी आलोचना का महत्वपूर्ण स्थान है। मार्क्सवादी आलोचना साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं मानती, बल्कि उसे सामाजिक जीवन, आर्थिक संरचना, वर्गीय संबंधों और ऐतिहासिक परिस्थितियों से जोड़कर देखती है। इस दृष्टि से साहित्य समाज की चेतना, संघर्ष और परिवर्तन की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाता है। हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना ने साहित्य के मूल्यांकन में जनजीवन, सामाजिक यथार्थ, वर्ग-चेतना और इतिहास-बोध को विशेष महत्व दिया। इस आलोचना-पद्धति ने यह स्पष्ट किया कि कोई भी साहित्यिक रचना अपने समय और समाज से अलग नहीं होती। लेखक जिस सामाजिक वातावरण, आर्थिक व्यवस्था और वैचारिक परिस्थितियों में जीता है, उसका प्रभाव उसकी रचना पर अवश्य पड़ता है। इसलिए साहित्य को समझने के लिए केवल उसके रूप और भाषा का अध्ययन पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके सामाजिक आधार और ऐतिहासिक संदर्भ को भी समझना आवश्यक है।

हिन्दी आलोचना में नामवर सिंह का योगदान इसी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने हिन्दी आलोचना को केवल परंपरागत मूल्यांकन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे व्यापक सामाजिक, ऐतिहासिक और वैचारिक आधार प्रदान किया। नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि में साहित्य को जीवन और समाज से गहरे रूप में जोड़कर देखा गया है। वे साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन करते समय उनके युग, सामाजिक परिस्थितियों, वैचारिक पृष्ठभूमि और रचनात्मक विशिष्टता को ध्यान में रखते हैं। इस कारण उनकी आलोचना में मार्क्सवादी दृष्टि का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, लेकिन यह प्रभाव किसी कठोर या एकांगी रूप में नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण और संवादधर्मी रूप में सामने आता है। नामवर सिंह ने अपनी आलोचना के माध्यम से हिन्दी साहित्य की परंपरा, आधुनिकता, प्रगतिशीलता और रचनात्मकता को नए ढंग से समझने का प्रयास किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ जैसे 'इतिहास और

आलोचना', 'कविता के नए प्रतिमान', 'दूसरी परंपरा की खोज' और 'छायावाद' हिन्दी आलोचना को नई वैचारिक दिशा प्रदान करती हैं। इन कृतियों में उन्होंने साहित्य को उसके ऐतिहासिक विकास, सामाजिक भूमिका और वैचारिक महत्व के आधार पर देखने का आग्रह किया। उन्होंने आलोचना को केवल रचना की विशेषताओं की चर्चा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज और साहित्य के बीच संबंध स्थापित करने वाली बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में विकसित किया।

नामवर सिंह की विशेषता यह है कि उन्होंने मार्क्सवादी आलोचना को केवल वर्ग-संघर्ष या राजनीतिक आग्रह तक सीमित नहीं किया। उनकी आलोचना में साहित्य की कलात्मकता, भाषा, संरचना और रचनात्मक ऊर्जा को भी पर्याप्त महत्व मिला है। वे साहित्य में सामाजिक चेतना और सौंदर्य-बोध दोनों को साथ लेकर चलते हैं। इसीलिए उनकी आलोचना हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना को अधिक व्यापक, संतुलित और प्रभावशाली रूप देती है। उनके यहाँ मार्क्सवादी दृष्टि साहित्य की सामाजिक उपयोगिता, इतिहास-बोध, जनपक्षधरता और परिवर्तनशील चेतना के रूप में प्रकट होती है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि में मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. नामवर सिंह द्वारा साहित्य को समाज, इतिहास और जनजीवन से जोड़कर देखने की पद्धति को स्पष्ट करना।
3. नामवर सिंह की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियों में सामाजिक यथार्थ, इतिहास-बोध और जनपक्षधरता का विश्लेषण करना।
4. हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना को समृद्ध करने में नामवर सिंह के योगदान को रेखांकित करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना और उसमें नामवर सिंह के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध-पत्र के लिए मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत नामवर सिंह की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ, हिन्दी आलोचना से संबंधित पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ और विश्वसनीय ऑनलाइन सामग्री का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि, उनके इतिहास-बोध, सामाजिक यथार्थ, जनपक्षधरता और मार्क्सवादी चेतना से संबंधित विचारों का सरल रूप में विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह देखने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने हिन्दी आलोचना को समाज, इतिहास और विचारधारा से जोड़ने में किस प्रकार योगदान दिया।

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना :

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना साहित्य को समाज, इतिहास और जनजीवन से जोड़कर देखने वाली महत्वपूर्ण आलोचना-दृष्टि है। यह आलोचना केवल रचना के सौंदर्य, भाषा, शैली या भाव-पक्ष तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह समझने का प्रयास करती है कि साहित्य किस सामाजिक परिस्थिति में लिखा गया है और उसमें किस वर्ग, समाज या जीवन-संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। मार्क्सवादी आलोचना का मुख्य आधार यह है कि साहित्य समाज से अलग नहीं होता, बल्कि वह अपने समय की सामाजिक, आर्थिक और ऐतिहासिक स्थितियों से प्रभावित होता है। इस दृष्टि में वर्ग-संबंध, आर्थिक विषमता, शोषण, श्रम, जनजीवन और सामाजिक परिवर्तन जैसे तत्व विशेष महत्व रखते हैं। हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी आलोचना ने साहित्य को आम आदमी के जीवन से जोड़ने का कार्य किया। इसने किसान, मजदूर, निम्न वर्ग, स्त्री और वंचित समाज की उपस्थिति को साहित्यिक मूल्यांकन का आधार बनाया। हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना का उद्देश्य केवल विचारधारा का प्रचार करना नहीं है, बल्कि साहित्य में छिपे सामाजिक यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना को पहचानना है। यह आलोचना साहित्य को समाज के संघर्षों,

विरोधाभासों और परिवर्तन की संभावनाओं के संदर्भ में देखती है। इसी कारण यह हिन्दी आलोचना को व्यापक और यथार्थवादी आधार प्रदान करती है।

हिन्दी आलोचना परंपरा में नामवर सिंह का स्थान :

हिन्दी आलोचना परंपरा में नामवर सिंह का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। उन्होंने हिन्दी आलोचना को केवल परंपरागत व्याख्या, गुण-दोष विवेचन या साहित्यिक प्रशंसा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे एक गंभीर वैचारिक और बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में विकसित किया। नामवर सिंह ने साहित्य को उसके समय, समाज, इतिहास और विचारधारा के संदर्भ में पढ़ने की पद्धति को मजबूत किया। उनकी आलोचना में व्यापक अध्ययन, तर्कपूर्ण दृष्टि, ऐतिहासिक समझ और साहित्यिक संवेदनशीलता का संतुलित रूप दिखाई देता है। वे किसी रचना को केवल उसके बाहरी रूप या भाषा के आधार पर नहीं परखते, बल्कि उसके भीतर मौजूद सामाजिक अर्थों और वैचारिक संकेतों को भी समझने का प्रयास करते हैं। हिन्दी आलोचना में उनका योगदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने परंपरा और आधुनिकता दोनों को नए ढंग से देखा। उन्होंने साहित्यिक मूल्यों को स्थिर और अंतिम नहीं माना, बल्कि उन्हें समय और समाज के साथ बदलती हुई प्रक्रिया के रूप में समझा। नामवर सिंह ने आलोचना को संवाद, विचार और पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया बनाया। इस दृष्टि से वे हिन्दी आलोचना को नई वैचारिक दिशा देने वाले प्रमुख आलोचक माने जाते हैं।

नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि में मार्क्सवादी चेतना

नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि में मार्क्सवादी चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, लेकिन यह चेतना किसी कठोर नारे या सीमित राजनीतिक आग्रह के रूप में नहीं आती। उनके यहाँ मार्क्सवादी दृष्टि साहित्य को समाज, इतिहास और मनुष्य के जीवन-संघर्ष से जोड़कर समझने की पद्धति के रूप में प्रकट होती है। वे साहित्य को केवल निजी अनुभूति या कल्पना का परिणाम नहीं मानते, बल्कि उसे सामाजिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक विकास से जुड़ी रचनात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं। नामवर सिंह की आलोचना में जनपक्षधरता, सामाजिक यथार्थ, इतिहास-बोध और परिवर्तनशील दृष्टि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे साहित्य में उस चेतना की खोज करते हैं, जो समाज के वास्तविक

जीवन, संघर्ष और विरोधाभासों को व्यक्त करती है। उनकी आलोचना में यह बात बार-बार स्पष्ट होती है कि साहित्य का मूल्यांकन केवल कलात्मकता के आधार पर नहीं, बल्कि उसके सामाजिक अर्थ और ऐतिहासिक महत्व के आधार पर भी होना चाहिए। नामवर सिंह ने मार्क्सवादी आलोचना को संतुलित रूप दिया, क्योंकि उन्होंने साहित्य की वैचारिकता के साथ उसकी कलात्मकता को भी महत्व दिया। इस प्रकार उनकी आलोचना-दृष्टि मार्क्सवादी चेतना को व्यापक, विवेकपूर्ण और रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करती है।

साहित्य, समाज और इतिहास का संबंध :

नामवर सिंह की आलोचना का एक प्रमुख आधार साहित्य, समाज और इतिहास के गहरे संबंध को समझना है। वे साहित्य को किसी अलग या स्वतंत्र संसार की वस्तु नहीं मानते, बल्कि उसे समाज के जीवन, संघर्ष, विचार और इतिहास से जुड़ी हुई रचनात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं। उनके अनुसार कोई भी साहित्यिक रचना अपने समय की सामाजिक स्थितियों, ऐतिहासिक परिवर्तनों और वैचारिक वातावरण से प्रभावित होती है। इसलिए किसी रचना को समझने के लिए उसके युग, समाज और इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। नामवर सिंह साहित्य के मूल्यांकन में इस बात पर ध्यान देते हैं कि रचना अपने समय के मनुष्य, समाज और समस्याओं को किस रूप में प्रस्तुत करती है। वे यह भी देखते हैं कि रचना में केवल तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण है या उसमें भविष्य की नई संभावनाओं और सामाजिक परिवर्तन की चेतना भी उपस्थित है। यही दृष्टि उन्हें मार्क्सवादी आलोचना से जोड़ती है। उनकी आलोचना में इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं है, बल्कि वह समाज की चेतना और साहित्यिक विकास को समझने का माध्यम है। इस प्रकार नामवर सिंह ने हिन्दी आलोचना में साहित्य, समाज और इतिहास के संबंध को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से स्थापित किया।

नामवर सिंह की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियों में आलोचना-दृष्टि :

नामवर सिंह की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ उनकी व्यापक और गहरी आलोचना-दृष्टि को स्पष्ट करती हैं। 'इतिहास और आलोचना' में उन्होंने साहित्यिक आलोचना को ऐतिहासिक संदर्भों से जोड़कर देखने का प्रयास किया। इस कृति में उनकी यह मान्यता दिखाई देती है कि साहित्य का मूल्यांकन उसके समय और समाज की पृष्ठभूमि

में ही अधिक सार्थक होता है। 'कविता के नए प्रतिमान' में उन्होंने आधुनिक हिन्दी कविता को समझने के लिए नए आलोचनात्मक मानदंड प्रस्तुत किए। यहाँ वे कविता को केवल भाव या भाषा के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी संवेदना, संरचना और सामाजिक अर्थों के आधार पर देखते हैं। 'दूसरी परंपरा की खोज' में उन्होंने हिन्दी साहित्य की परंपरा को नए दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया और यह दिखाया कि साहित्यिक परंपरा केवल मुख्यधारा तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें लोक, जन और वैकल्पिक चेतना भी शामिल होती है। 'छायावाद' में उन्होंने छायावादी काव्य को केवल रहस्यवाद या व्यक्तिवाद तक सीमित न मानकर उसके ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व को समझने का प्रयास किया। इन कृतियों से स्पष्ट होता है कि नामवर सिंह की आलोचना में इतिहास-बोध, समाज-बोध, वैचारिकता और साहित्यिक संवेदनशीलता का संतुलित रूप उपस्थित है।

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में नामवर सिंह का योगदान :

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में नामवर सिंह का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने मार्क्सवादी आलोचना को केवल वर्ग-संघर्ष या राजनीतिक विचारधारा की संकीर्ण सीमा में नहीं रखा, बल्कि उसे साहित्य, समाज, इतिहास और रचनात्मकता से जोड़कर अधिक व्यापक बनाया। उनके आलोचना-कर्म ने यह स्पष्ट किया कि साहित्य में सामाजिक यथार्थ और जनपक्षधरता का महत्व है, लेकिन साहित्य की कलात्मकता और रचनात्मक विशिष्टता की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। नामवर सिंह ने हिन्दी आलोचना को विचारशील, तर्कपूर्ण और संवादधर्मी बनाया। उन्होंने साहित्यिक रचनाओं का मूल्यांकन करते समय उनके सामाजिक आधार, ऐतिहासिक संदर्भ और वैचारिक संकेतों को विशेष महत्व दिया। उनकी आलोचना ने हिन्दी साहित्य को जनजीवन और सामाजिक परिवर्तन की दिशा से जोड़ने में सहायता की। उन्होंने परंपरा को भी नई दृष्टि से देखने का आग्रह किया और आधुनिक साहित्य को भी उसके सामाजिक अर्थों के साथ समझा। इस प्रकार नामवर सिंह ने हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना को गहराई, संतुलन और व्यापकता प्रदान की। उनका योगदान हिन्दी आलोचना को वैचारिक रूप से समृद्ध करने और साहित्य को समाज से जोड़ने के रूप में विशेष रूप से रेखांकित किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध-पत्र के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना ने साहित्य को समाज, इतिहास और जनजीवन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस आलोचना-दृष्टि ने साहित्य के मूल्यांकन को केवल भाषा, शैली और सौंदर्य तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसमें सामाजिक यथार्थ, वर्गीय संबंध, आर्थिक विषमता, शोषण और परिवर्तन की चेतना को भी महत्वपूर्ण माना। इसी कारण हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना साहित्य को अपने समय और समाज की सच्चाइयों को समझने का प्रभावी माध्यम बनाती है। नामवर सिंह का आलोचना-कर्म इसी व्यापक मार्क्सवादी आलोचना-दृष्टि से जुड़ा हुआ है। उन्होंने साहित्य को जीवन और समाज से अलग करके नहीं देखा, बल्कि रचना के सामाजिक, ऐतिहासिक और वैचारिक आधार को समझने पर बल दिया। उनकी आलोचना में इतिहास-बोध, समाज-बोध, जनपक्षधरता और रचनात्मकता का संतुलित रूप दिखाई देता है। वे साहित्यिक रचना के मूल्यांकन में केवल विचारधारा को ही नहीं, बल्कि उसकी कलात्मकता, भाषा, संरचना और रचनात्मक विशेषता को भी महत्व देते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि नामवर सिंह ने मार्क्सवादी आलोचना को कठोर, एकांगी या नारेबाजी वाली पद्धति के रूप में स्वीकार नहीं किया। उन्होंने उसे संवादधर्मी, विवेकपूर्ण और सृजनात्मक आलोचना-दृष्टि के रूप में विकसित किया। उनके यहाँ मार्क्सवादी चेतना समाज, इतिहास, जनजीवन और परिवर्तनशील दृष्टिकोण के रूप में अभिव्यक्त होती है। इस कारण उनकी आलोचना हिन्दी साहित्य को केवल वैचारिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि साहित्यिक और सौंदर्यात्मक स्तर पर भी समृद्ध करती है। नामवर सिंह की प्रमुख कृतियाँ जैसे 'इतिहास और आलोचना', 'कविता के नए प्रतिमान', 'दूसरी परंपरा की खोज' और 'छायावाद' उनकी आलोचना-दृष्टि की व्यापकता को स्पष्ट करती हैं। इन कृतियों में उन्होंने साहित्य को उसके ऐतिहासिक संदर्भ, सामाजिक आधार और वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ समझने का प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी आलोचना में नए प्रतिमानों की स्थापना की और परंपरा को भी नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा दी। इस शोध-पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में नामवर सिंह का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आलोचना को केवल साहित्यिक व्याख्या तक

सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज, इतिहास और विचारधारा से जोड़कर एक गंभीर बौद्धिक प्रक्रिया बनाया। उनके आलोचना-कर्म ने हिन्दी साहित्य में जनपक्षधरता, सामाजिक यथार्थ और इतिहास-बोध को मजबूत आधार दिया। अतः कहा जा सकता है कि नामवर सिंह ने हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना को गहराई, संतुलन और व्यापकता प्रदान की। उन्होंने साहित्य को समाज से जोड़ने, आलोचना को वैचारिक दृढ़ता देने और हिन्दी आलोचना परंपरा को समृद्ध करने में विशेष भूमिका निभाई। इस दृष्टि से नामवर सिंह हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना के ऐसे महत्वपूर्ण आलोचक हैं, जिनका योगदान आज भी हिन्दी साहित्य-अध्ययन के लिए अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिंह, नामवर. इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सिंह, नामवर. दूसरी परंपरा की खोज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सिंह, नामवर. छायावाद. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, नामवर. वाद-विवाद-संवाद. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. शर्मा, रामविलास. मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. शर्मा, रामविलास. आस्था और सौंदर्य. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा, रामविलास. प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. सिंह, बच्चन. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. मिश्र, मैनेजर पाण्डेय. साहित्य और इतिहास-दृष्टि. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. मार्क्स, कार्ल एवं एंगेल्स, फ्रेडरिक. साहित्य और कला. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details